Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 12 ~ Issue 1 (2024) pp: 275-279
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

अस्मिता विकास की संकल्पना : एक सैद्धांतिक अन्वेषण

ओम प्रकाश,

पीएचडी शोधार्थी,

केन्द्रीय शिक्षा संस्थान,

शिक्षा विभाग,

दिल्ली विश्वविद्यालय

*Received 12 Jan., 2024; Revised 25 Jan., 2024; Accepted 28 Jan., 2024 © The author(s) 2024. Published with open access at **www.questjournals.org***

विद्यालय में विद्यार्थी लगातार अपने साथियों के साथ और विद्यालयी वातावरण में रहते हुए कुछ उद्देश्यों के साथ शिक्षण-प्रक्रिया में संलिप्त रहता है। इसके साथ-साथ उसका शारीरिक, मानसिक परिवर्तन हो रहा होता है तथा कक्षा में भी पदोन्नोती हो रही होती है व साथ ही अस्मिता विकास की प्रक्रिया चल रही होती है। इस शोध कार्य का उद्देश्य है कि किस प्रकार की और किस तरह से अस्मिताविकास में विभिन तत्वों का योगदान होता है और किस तरह की अन्तरक्रिया के माध्यम से अर्थों का निर्माण हो रहा होता है जे छात्र की अस्मिताको प्रभावित करते रहते हैं।

विभिन्न विचारकों ने 'अस्मिता' और 'आत्मन्' का प्रयोग एक दूसरे पयार्यवाची के रूप में किया है। 'अस्मिता' शब्द की व्याख्या बहुत से विचारकों ने प्रस्तुत की है। मार्सिया (1980) के अनुसार अस्मिता को किसी के विश्वास, मूल्य, और पसंद से जोड़कर देखा जाता है। यह स्व-विकसित आन्तरिक, और एक व्यक्ति के विश्वास व अभिहात्री के लगातार परिवर्तन होने वाले संघटन से सम्बन्धित होती है। स्व के सापेक्ष अस्मिता व्यक्ति की योग्यता, संवेदना, अपेक्षा इतिहास, विश्वास के संगठित ढांचे को प्रस्तुत करती है। अस्मिता निर्माण से सम्बन्धित कुछ विचारकों ने इसे व्यक्ति के विकासात्मक संदर्भों से जोड़कर देखा है, तो कुछ ने इसे सामाजिक संदर्भ में प्रति-स्थापित करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत कार्य में विचारकों द्वारा 'अस्मिता' से सम्बन्धित 'वैचारिक ढाँचा' विकसित करने के लिए बहुत से सिद्धांतों का प्रयोग किया गया है। मनोसामाजिक व विकासात्मक परिप्रेक्ष्य को समझने के लिए एरिक इरिक्सन, ब्रोनफेनब्रेनर व मार्सिया के सिद्धन्तों को शामिल किया गया है। आस्तित्वादी परिप्रेक्ष्य के लिए 'रोलो में' (Rollo May) के कार्य को महत्व दिया गया है। आत्मन के दूसरे के नजरीये से समझने के लिए 'गर्गन' (Gergen) को संदर्भित किया गया है। यहाँ यह भी जरूरी है कि 'आत्मन और अस्मिता को उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक और नृजातीय पृष्ठभूमि के संदर्भ में भी देखा जाए तो इसके लिए 'जेन्किंस' (Jenkins) के कार्य को महत्व दिया गया है। 'कार्ल रोजर्स' के कार्य को 'अस्मिता' विकास में परिवार की भूमिका के महत्व को जानने के लिए किया गया है।

*Corresponding Author: ओम प्रकाश

मनोसामाजिक परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत इरिक इरिक्सन (Erik Erikson) की मूल अभिरूचि इस बात में थी कि बच्चों, किशोरों आदि में व्यक्तिगत अस्मिता (Personal Identity) किस तरह से विकसित होती है और समाज इस पहचान को बनाने में किस तरह से मदद करता है। चूँकि उनके सिद्धांतों में व्यक्तिगत, सांवेगिक तथा सांस्कृतिक या सामाजिक विकास को समन्वित किया गयाहै, अतः इसे मनोसामाजिक सिद्धांत कहा जाता है। इरिक्सन का यह सिद्धांत पूरे जीवन-अवधि में होने वाले विकास को आठ विभिन्न अवस्थाओं (stages) में बाँटकर अध्ययन करता है। प्रत्येक अवस्था में एक मनोसामाजिक चुनौती (Psychosocial challenge) होती है जिसे इरिक्सन ने संकट ;बतपेपेद्ध की संज्ञा दी है जो विकास व आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करता है। जितना ही उत्तम ढंग से व्यक्ति संकट का समाधानकरताहै, उतना ही उसका व्यक्त्वि स्वास्थ्यकर (healthy) होता है और अपने बारे में एक सकारात्मक सोच विकसित करता है। प्रत्येक अवस्था के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही पक्ष होते है यदि समाधान नकारात्मक हुआ तो इसे आगे की अवस्थाओं में होने वाले विकास मंदित हो जाता है और व्यक्ति की अस्मिता व व्यक्तित्व दोषपूर्ण हो जाता है।

विकास की आठ अवस्थाओं में से पांचवी अवस्था, पहचान, बनाम संभ्रांति इस शोध कार्य के लिए प्रासंगिक है। पांचवी अवस्था (12 से 18 साल) जो कि एक छात्र के लिए किशोरावस्था (Adolescence) की अवस्था होती है । इस अवस्था में किशारों को यह जानने की प्राथमिकता बनी होती है कि वे कौन है, वे किस लिए है और वे अपनी जिंदगी में कहाँ जा रहे है। इसे इरिक्सन ने 'पहचान' (identity) की संज्ञा दी हे। इस अवस्था में छात्र कई भूमिकाओं का निर्वहन करते है और भिन्न-भिन्न दिशाओं में भिन्न-भिन्न राहों का अन्वेषण करते हैं। अगर किसी कारणवश वह भविष्य का रास्ता नहीं निश्चित कर पाते तो वह अपनी पहचान के बारे में 'संभ्रांति (Confusion) की स्थिति में होते हैं। जब पहचान बनाम संभ्रांति के संकट का सही समाधान कर लेते हैं, तो उनमें एक विशेष मनो सामाजिक गुण (Psychosocial virtue) उत्पन्न होता है, जिसे 'कर्त्तव्यपरायणता' (fidelity) की संज्ञा दी जाती है। इसके परिणामस्वप किशोर छात्रों मे समाज के नियमों तथा आदर्शों के अनुरूप व्यवहार करने की उन्मुखता बढ़ जाती है।

इस तरह से बर्क (2007) ने इरिक्सन की पहचान निर्मित करने वाली व्यवस्था को महत्वपूर्ण और संवेदनशील अवस्था माना है, क्योंकि इस अवस्था में वह अपनी व्यक्तिगत क्षमता, मैं कौन हूँ, क्या कर सकता हूँ, और जिंदगी को किस दिशा में ले जाने में सक्षम हूँ से परिचित हो जाता है और अपने को एक सफल, खुशी और सृजनशाली व्यक्तिगत पहचान बनाने की दिशा में अग्रसर हो जाता है।

अतः अस्मिता को व्यैक्तिक, सामाजिक, व्यावसायिक व धार्मिक परिस्थितियों के संदर्भ में समझना चाहिए। इसके साथ-साथ अस्मिता विकास को पूर्व-यौनावास्था (Pre-adolescence age) से लेकर यौन व्यस्कावस्था (Young adulthood) तक की विकास की अवस्था के रूप में समझना चिहए क्योंकि अस्मिता का विकास विभिन्न अवस्थाओं से होकर संपन्न होता है।

इरिक्सन के कार्य को आगे बढ़ाते हुए जेम्स मार्सिया (1991) ने आस्मिता विकास को दो मनोवैज्ञानिक यंत्र, अनवेषण और प्रतिबद्धता (Exploration and Commitment) से सम्बन्धी करते हुए चार स्थितियों का वर्णन किया है। वह उनके अनुसार अन्वेषण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक किशोर वैकल्पिक विचारों, मूल्यों व व्यवहारों पर विचार करता है और उन्हें प्रयोग में लाता है। वह यह निर्धारित करने के लिए प्रयासरत रहता है कि कौन सा विकल्प उसके लिए संतुष्टि प्रदान करेगा। वह इस प्रक्रिया के आधार पर चार प्रकार की 'अस्मिता प्रस्थिति' (Identify Status) के बारे में व्याख्या प्रस्तुत करता है।

*Corresponding Author: ओम प्रकाश

अतः यह अन्वेषण की प्रक्रिया व्यक्ति दर व्यक्ति अलग दिखाती है। कुछ व्यक्ति एक ही 'प्रस्थिति' में रहने है तो कुछ व्यक्ति अलग-अलग समय में भिन्न-भिन्न 'प्रास्थिति' में रहते है। इसलिए आवश्यकता है कि वहन स्तर पर अलग-अलग छात्रों की अस्मिता विकास का एक सघन अध्यन किया जाए।

उनमें से पहली प्रस्थिति, 'अस्मिता उपलब्धि' (Identiy Achievement) है जिसे व्यक्ति उपलब्ध विभिन्न विकल्पों में से खोज करके चयन करता है और उसे अपने व्यवहार में अपनाता है तथा उसके प्रतिबद्धता रखता है। वह लगातार इस अस्मिता के साथ जीवन जीने के लिए प्रयासरत रहता है और अपने व्यवहार का हिस्सा बनाए रखता है। दूसरी प्रस्थिति, अस्मिता अधिस्थगन (Identity Moratoium) की होती है जिसमें व्यक्ति लगातार अन्वेषण की प्रक्रिया में लगा रहता है लेकिन उसे अपने व्यक्तित्व का हिस्सा नहीं बना पाता या उससे देरी आती है। जिस कारण इस स्थिति को इरिक्सन ने सकंट (crisis) की अवस्था कहा है। आधुनिक वैश्विक परिस्थिति में इसमें देर होना स्वाभाविक है क्योंकि वर्तमान की सामाजिक व्यवस्था एक जटिल सामाजिक व्यवस्था है जिससे स्थायित्व आने में देरी होती है। क्योंकि युवा वर्ग विभिन्न उपलब्ध विकल्पों को चयन करने में ज्यादा शामिल रहता है लेकिन उसमें स्थायित्व नहीं ला पाता। अतः यह प्रस्थिति, अधिस्थगन की स्थिति होती है जो कि एक युवा वर्ग की अस्मिता विकास के लिए स्वस्थयकर होती है। इसे चुनौती के रूप में नहीं देखा जाता जाता है। तीसरी प्रस्थिति, अस्मिता फॉर क्लोजर की होती है जिसमें युवा वर्ग बिना विकल्पों पर ध्यान दिये अभिभावकों के निर्णय को स्वीकारते है और अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बनाते है और इसके प्रति प्ररतिबद्ध होते है। चौथी प्रस्थिति, 'अस्मिता व्यापन' (Identity Diffenision) की है जिसमें युवा वर्ग अकेन्द्रियतता की स्थिति में रहता है जो अपनी पहचान के बारे में अस्पष्ट रहता है। उसको इस बात को लेकर अस्पष्टता रहती है कि वह क्या है और क्या चाहता है? इस तरह की पहचान के साथ एक युवा विद्रोही स्वभाव का हो सकता है। प्रमुखतः प्रथम और द्वितीय परिस्थिति ही एक स्वस्थकर व्यक्तित्व व अस्थिरता विकास के लिए बेहतर हो सकते हैं।

जेम्स मार्सिया (1991) का यह कार्य अस्मिता विकास को स्पष्ट करने में सहायक है और प्रस्तुत शोध कार्य में किशोरावस्था के विद्यार्थियों को मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य से समझने में सहायक हो सकता है। जब विद्यार्थियों के अस्मिता विकास की प्रक्रिया को समझा जायेगा और अर्थ निर्माण की प्रक्रिया के तहत उसके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले विभिन्न कारकों को एक वृहत अध्ययन किया जायेगा तो यह सिद्धांत सहायक हो सकता है।

रोल्लो मे (1953) ने अपने सिद्धांत में व्यक्तित्व विकास की व्याख्या करने के लिए व्यक्ति तथा माता-पिता तथा उनके प्रतिस्थापित प्रारूप जैसे शिक्षक व दोस्त आदि के बीच दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक संबंधों को आधार माना है। एक बालक की दैहिक निर्भरता अपनी माँ से उसके गर्भ से ही स्थापित हो जाती है। लेकिन जैसे-जैसे बालक की आयु बढ़ती है, माँ पर दैहिक निर्भरता में कमी आती है और मनोवैज्ञानिक निर्भरता बनी रहती है। उन्होंने आत्मन की अवस्था के विकास को चार अवस्थाओं में परिभाषित किया है। पहली अवस्था को वह निर्दोषता (Innocence) की अवस्था कहते है जिसमें नवजात शिशु को 'आम्न' की चेतना नहीं होती। दूसरी अवस्था विद्रोह व बगावत की आवस्था होती है जिसमें दो या तीन साल की आयु के बच्चे आते हैं या फिर किशोरावस्था के बच्चे आते हैं। इस अवस्था में बच्चे सामाजिक नियमों एवं पारिवारिक नियमों को सक्रिय रूप से अस्वीकृत कर देते हैं। इस तरह का व्यवहार सख्त, स्वतः तथा प्रतिवर्तित होता है। तीसरी अवस्था आत्मन की साधारण चेतन की होती है जिसमें व्यक्ति अपनी त्रुटियों से सिखने लायक हो जाता है। चौथी अवस्था, परिपक्वता की

*Corresponding Author: ओम प्रकाश

अवस्था होती है जिसे सर्जनात्मक चेतन की अवस्था कहा जाता है क्योंकि इस अवस्था में वह स्वतंत्र होकर यह निर्णय लेने की अवस्था में होता है कि वह अपने पूर्व के अनुभवों के आधार पर निर्देशित होगा या नहीं।

प्रस्तुत शोध में रोल्लो मे की दूसरी अवस्था सहायक होगी क्योंकि यह किशोरावस्था से सम्बन्धित है और एक विद्यार्थी के विद्राही भाव, व्यवहार व अस्मिता को समझने में सहायक हो सकेगी है। रोल्लो मे एक आस्तित्ववादी विचारक है और अस्तित्ववादी विचारकों का मानना है कि व्यक्ति के अनुभवों को एक विशेष समय और स्थान के आधार पर संदर्भित किया जाना चाहिए और उसी आधार पर उसकी व्याख्या की जानी चाहिए। क्योंकि व्यक्ति और उसकी दुनिया एक दूसरे से अलग नहीं बल्कि एक दूसरे से सम्बन्धित और स्थापित है। इसलिए एक विद्यार्थी की अस्मिता विकास की प्रक्रिया को उसके और उसके साथ सम्बन्धित दुनिया के संदर्भ में ही अवलोकित किया जाना चाहिए।

जेन्किंस (2008) अस्मिता विकास की प्रक्रिया को सामाजिक दायरों के संदर्भ में परिभाषित करते है और मानते है कि एक व्यक्ति की सामाजिक पहचान उसके अपने विशेष समूहों और व्यक्तियों के साथ अन्तरक्रिया व अन्तर सम्बन्धों से ही विकसित होती है। इसलिए एक व्यक्ति की अस्मिता को सामूहिक संदर्भों व ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों के अंतर्गत देखना चाहिए और उनके मध्य होती अंतरक्रिया के आधार पर व्याख्या करना चाहिए। इसलिए एक विद्य़ार्थी जो है वह स्वयं नहीं है बल्कि उसके पीछे उसके विशेष समूहों और उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का भी योगदान है। अतः उसकी अस्मिता को पहचानने में इन सबको महत्व देना चाहिए। अतः इस तरह की पृष्ठभूमि शोधार्थी को एक विस्तृत अवलोकन का आधार प्रस्तुत करेगी।

गर्गन (2011) यह मानते हैं कि एक व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक आत्मन (Psychological Self) महत्वपूर्ण अन्यों के साथ सम्बन्धों से विकसित होता है और उनसे सम्बन्धित रहता है। इसलिए वह इसको 'सम्बन्धित आत्मन्' (Relational Self) कहते हैं। वह इस अवधारणा को आलोचित करते हैं कि विश्व व्यक्तिगत आत्मन (Individual Self) द्धि से निर्मित है। वह इसके विपरित तर्क देते हैं कि व्यक्ति को उनके सामूहिक अस्मिताओं के संदर्भ में और उससे सम्बन्धित महत्वपूर्ण अन्यों के सम्बन्धों पर देखना चाहिए कयोंकि इनके अन्तर्गत ही एक व्यक्ति की अस्मिता का विकास होता है। अतः प्रस्तुत शोध में विद्यार्थी की अस्मिता का विकास होता है। अतः प्रस्तुत शोध में विद्यार्थी की अस्मिता विकास में उसके महत्वपूर्ण अन्यों के योगदान को देखना आवश्यक हो जायेगा।

कार्ल रोजर्स (1984) ने अस्मिता विकास की प्रक्रिया में व्यक्ति के दो तरह के सम्मान को महत्व दिया है क्योंकि इसके आधार पर ही एक सफल व सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। पहला, स्वीकारात्मक सम्मान (Positiv regard) तथा दूसरा आत्म सम्मान (Self regard) है। जब एक बच्चे को अपने आस-पास, परिवार व दूसरों से प्यार, स्नेह व अनुराग के आधार पर स्वीकारात्मक सम्मान मिलता है तो वह बहुत तेजी के साथ एक सफल व्यक्ति बनने की ओर अग्रसर होता है। वही दूसरी तरफ जब बच्चे को दूसरों से सम्मान मिलता है तो उसके अन्दर स्वयं के प्रति आत्म-सम्मान विकसित होता है और उसमें संतोषजनक आत्म-अनुभूतियाँ उत्पन्न होती है। जिससे वह अपनी क्षमताओं एवं योग्यताओं को पहचान कर पाता है और उसका सही-सही प्रयोग करता है और एक पूर्णरूपेण सफल व्यक्ति के रूप में अपने को स्थापित कर पाता है। अतः अस्मिता विकास में आत्मअनुभूतियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो कि उसके पारिवारिक वातावरण व महत्वपूर्ण दूसरों के व्यवहार से निर्मित होती है।

*Corresponding Author: ओम प्रकाश

उपरोक्त विवरण मनोसामजिक परिप्रेक्ष्य को समाहित किए हुए है और एक विद्यार्थी की अस्मिता विकास में उसके सामाजिक परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत चलने वाली मनोवैज्ञानिक क्रियाविधियो को महत्व देता है।

References

[1]. Althusser, L. (1985). Ideology and Ideological state apparatuses. In Shukla and Kumar (Eds.), Sociological Perspective in Education: A Reader, Delhi: Chanakya Publications.

[2]. Beattie, J. (2004): Other Cultures : Aims, Methods and achievements in Social Anthropology. London: Routhledge.

[3]. Berk, Laura E. (2006). Child Development (7th Ed.). Boston : Pearson.

[4]. Bronfenbrunner, U. (1986). Ecology of the Family as a context for Human Development, Developmental Psychology, 22 (6), 723-742.

[5]. Cohen, L., Manion, L. and Morrison, K. (2018). Research Methods in Education, New York: Routledge

[6]. Dewey, J. (2008). The School and Society, Delhi: Aakar Books.

[7]. Frager, R and Fadiman, J. (1984). Personality and Personal Growth (2nd ed.), New York: Harper Collins.

[8]. Gergen, Kenneth J. (2011). The Self as Social Construction. Psychological Studies 56(1). 109-116.

[9]. Hjele, L.A. and Ziegler, D.J. (1992), Personality Theories: Basic Assumptions, Research and Applications (3rd Ed.) New York: McGraw Hill.

[10]. Haralombos, M. (2017). Sociology: Themes and Perspectives (5th Eds.) India : Oxford.

[11]. Hergenhahn, B.R. and Olson, M.H. (2003). An Introduction to Theories of Personality. New Jersey : Pearson Education.

[12]. Kumar, Sandeep (2017). Reader in social theory of education: Context of India. New Delhi: Research Media.

[13]. Mannheim, K. (1936). Ideology and Utopia. London: Routledge.

[14]. Marcia, J.E. (1980). Identity in Adolescence. New York, NY: Wiley.

[15]. Pearsons, T. (1985).The School Class as a Social System. In Shukla and Kumar (eds.), Sociological Perspective in Education: A Reader. Delhi: Chanakya Publications.

[16]. Thapan M. (1991). Life at School : An Ethnographic Study. Delhi : Oxford University Press.

[17]. एन.सी.ई.आर.टी (2005), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

[18]. कौल, लोकेश (2012), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नोण्डा (यू.पी.) विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि.।

*Corresponding Author: ओम प्रकाश